पुस्तक - वितान

पाठ- जूझ

लेखक : आनन्द यादव

लेखक की इच्छा : लेखक की इच्छा है कि वह पढ़े, परंतु पिता से कहने की हिम्मत नहीं होती, क्योंकि पिता चाहते हैं किलेखक खेती का काम सँभाले। लेखक को लगता है खेती में कुछ नहीं रखा है। जो बाबा के समय में था, वह दादा के समय में नहीं। अगर वो नौकरी करेगा तो चार पैसे हाथ आएँगे, विठोबा आण्णाकी तरह कुछ काम-धंधा किया जा सकता है।

माँ के साथ योजना बनाना : एक दिन लेखक की माँ जब कंडे थाप रही थी, लेखक ने अपने पढ़ने की इच्छा माँ से कही।माँ विवश होकर बोली- दादा से पढ़ाई की बात करने पर वह जंगली सूअर की तरह गुर्राताहै।

लेखक माँ से कहता है - अब खेती के काम खत्म हो गए हैं। हम रात को दत्ता जी राव के पास जाते हैं। तुम दत्ता जी राव को मेरी पढ़ाई के बारे में समझाना। दत्ता जी राव दादा को समझायेंगे।

दत्ता जी राव से भेंट : रात को लेखक अपनी माँ के साथ दत्ता जी राव के घर जाते हैं। लेखक की माँ दत्ता जी राव को लेखक की पढ़ने की इच्छा बताती है। माँ बताती है - दादा सारा दिन रखमाबाई के पास समय बिताते हैं। दादा खेत के काम में हाथ नहीं लगाते। सारे गाँव में आजादी से घूम सकें, इसलिए लेखक की पढ़ाई छुड़ाकर खेती के काम में झोंक दिया।

लेखक दत्ता जी राव से कहता है - अब जनवरी का महीना है, परीक्षा नजदीक है। अगर अब भी वो कक्षा में बैठता है, तब भी पढ़ाई की दुहराई करके पाँचवी पास कर सकता है। उसका एक साल बच जाएगा। खेती में अभी अधिक काम नहीं है।

<u>दत्ता जी राव की योजना</u> : दत्ता जी राव लेखक व उसकी माँ से कहते हैं - अभी तुम घर जाओ। जब तुम्हारे दादा आ जाये, तो मेरे पास भेजना।वो लेखक से कहते हैं - दादा के आने के एक घड़ी बाद तुम भी आ जाना। दादा के घर आने पर माँ ने कहा-साग-भाजी लेकर दत्ताजी राव के घर गई थी। उन्होंने तुम्हें बुलाया है, क्योंकि वोतुम से कई दिनों से नहीं मिले।

दादा तुरंत दत्ता जी राव से मिलने चल देते हैं। उनके लिए दत्ता जी राव के घर जाना सम्मान की बात है। आधे घंटे बाद लेखक दत्ता जी राव के घर पहुँच जाता है और कहता है – माँ ने दादा को खाना खाने के लिए बुलाया है।

दत्ता जी राव लेखक से पूछते हैं- कौन सी कक्षा में पढ़ता है? लेखक उत्तर देते हैं- पाँचवीं में पढ़ता था। अब नहीं पढ़ता, क्योंकि दादा ने खेत में पानी लगाने के लिए कहा है। लेखक की बात सुनकर दत्ता जी राव ने दादा को डाँटा - पत्नी और बच्चों को काम में लगा कर खुद पूरे गाँव में घूमता है। अपनी मस्ती के लिए बच्चे की बलि चढ़ा रहे हो।

दत्ता जी राव लेखक से कहते हैं- कल से स्कूल जाना। साल खराब नहीं होना चाहिए। सुबह-शाम जो कर सको,वो खेत का काम करना। दादा कहते हैं - इसे गलत आदत पड़ गई थी, इसीलिए स्कूल से निकाल लिया। यह कंडे बेचता है, चारा बेचता है, सिनेमा देखता है, खेलता है।दत्ता जी राव ने दादा को चुप करवा दिया।

घर आकर दादा ने कहा - पाठशाला ग्यारह बजे लगती है। सुबह उठकर खेत पर पानी लगाना, वहाँ से स्कूल जाना। छुट्टी होने पर खेत पर आना और जानवर चराना। खेत में अधिक काम होने पर पाठशाला पर गैरहाजिर रहना पड़ेगा।

लेखक के पाठशाला के अनुभव : लेखक जब पाँचवीं कक्षा में जाकर बैठा, गली के दो लड़कों को छोड़कर बाकी सब लड़के नये थे। लेखक अपरिचित की तरह कक्षा में एक बेंच के सिरे पर बैठ गया। उसकी सारी पुरानी किताबें और कॉपियाँ किसी काम की नहीं रही थी। कक्षा के शरारती बच्चे चह्वाण ने उसका गमछा छीन लिया और मास्टर की टेबल पर रख दिया। स्कूल में जब बीच की छुट्टी हुई तो चह्वाण ने उसकी धोती खींचने की कोशिश की। कक्षा उसे पराई-पराई लगी। एक बार लेखक ने सोचा कि वो स्कूल नहीं जाएगा, परंतु अगले दिन वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया। अपनी माँ से कह कर उसने दो नाड़ी वाली चड्डी और एक नई टोपी आठ दिन में मँगवा ली और उसे पहनकर स्कूल जाने लगा।

वसंत पाटील से दोस्ती : मंत्री नाम के अध्यापक कक्षा अध्यापक के रूप में आए।वो गणित पढ़ाते थे। वो छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। हाथ से गर्दन पकड़कर पीठ पर घूसा लगाते थे। ऊधम करने वाले लड़के डरने लगे। पढ़ने वाले लड़कों को शाबाशी देते थे। कक्षा में वसंत पाटील पढ़ने में होशियार था, शांत स्वभाव का था। मास्टर ने उसे कक्षा का मॉनिटर बना दिया था। लेखक को लगता कि उसे मॉनिटर बनना चाहिए था, वो बड़ा है। परंतु बाद में लेखक को लगा कि उसे किसी झंझट में नहीं पड़ना चाहिए, बल्कि पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

कक्षा में अगर पाटील को शाबाशी मिलती, तो लेखक भी शाबाशी पाने की कोशिश करता। धीरे-धीरे लेखक का गणित अच्छा हो गया। अब एक तरफ से पाटील लड़कों के सवाल जाँचता, दूसरी तरफ से लेखक सवाल जाँचता। लेखक की वसंत से दोस्ती हो गई। मास्टर लेखक को आनंदा कहकर बुलाते थे।

<u>लेखक पर न. वा. सौंदलगेकर का प्रभाव</u> : न. वा. सौंदलगेकर मराठी पढ़ाते थे। कविताएँ बहुत अच्छे ढंग से पढ़ाते थे। उन्हें मराठी के साथ-साथ अंग्रेजी की कविताएँ भी कंठस्थ थी। उन्हें अनेकों छंदों की लय, ताल, गति अच्छी तरह आती थी। वो स्वयं भी कविता लिखते थे। जब मराठी के अध्यापक कविता सुनाते, तब लेखक को अपना ध्यान ही नहीं रहता। वो पूरे मनोयोग से मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति, चाल का रसपान करते।

सुबह-शाम खेतों पर पानी लगाते समय और जानवरों को चराते समय लेखक मास्टर के हाव-भाव, यति-गति और आरोह-अवरोह के अनुसार कविताएँ खुलकर गाता और मास्टर की तरह ही अभिनय करता। लेखक को पहले खेत में पानी देते समय और पशु चराते समय यह लगता था कि कोई गपशप और बातचीत के लिए होना चाहिए, परंतु अब लेखक को अकेलापन अच्छा लगने लगा। लेखक जब अकेला होता, तो ऊँची आवाज में कविता गाता। गाते-गाते नाचने लगता। लेखक कई कविताएँ खुद की चाल से गाने लगा। लेखक ने अनंत काणेकर की कविता को मास्टर की चाल से अलग चाल में गाया। मास्टर को लेखक का प्रयास अच्छा लगा। उन्होंने इस कविता को छठी-सातवीं कक्षा में सुनवाया। पाठशाला के एक समारोह में भी गवाया।

<u>कविता बनाने के नए परीक्षण</u> : मास्टर लेखक को कवियों के चरित्र और संस्मरण सुनाते। लेखक को लगता कि कवि भी हमारे जैसे हाड़-माँस और क्रोध-लोभ के मनुष्य होते हैं। अब लेखक भी जानवर चराते समय फसलों पर, जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। हमेशा कागज़-पेंसिल अपनी जेब में रखने लगा। कई बार कविता सुनाने का उत्साह इतना होता कि लेखक रात को ही मास्टर के घर कविता सुनाने पहुँच जाता। मास्टर लेखक को बताते कि कविता की भाषा कैसी होनी चाहिए। मास्टर छंद, अलंकार और शुद्ध लेखन से संबंधित ज्ञान भी लेखक को देते। लेखक कविता बनाते समय अलंकार, छंद आदि को सूक्ष्मता से देखते। लेखक पर शब्दों का नशा चढ़ने लगा।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1)"जूझ" शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथानायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर : जूझ का अर्थ होता है संघर्ष। कहानी के कथानायक का पूरा जीवन संघर्ष ही है। कथानायक पहले स्कूल जाने के लिए संघर्ष करता है। पहले अपनी माँ को मनाता है, फिर दत्ता जी राव को अपने स्कूल जाने की इच्छा बताता है तथा दत्ता जी राव के माध्यम से अपने पिता को मनवाता है।

स्कूल में जाने परकक्षा में अपने आप को स्थापित करने के लिए पहले धोती छोड़कर चड्डी पहनकर स्कूल जाने लगा। गणित के अध्यापक को प्रभावित करने के लिए तथा वसंत पाटील की तरह कक्षा में विशेष स्थान प्राप्त करने के लिए भी उसने संघर्ष किया और उसने कक्षा में विशेष स्थान प्राप्त कर लिया।

कथानायक मराठी भाषा के अध्यापक सौंदलगेकर की कविता पढ़ने की शैली से और कविता रचना से प्रभावित हुआ और अपने आप को कवि के रूप में स्थापित करने के लिए उसका संघर्ष शुरू हुआ। कथा के अंत तक उसका संघर्ष अनवरत जारी है।

कथानायक के संघर्ष को देखकर हम कह सकते हैं कि कहानी का शीर्षक पूर्ण रूप से उचित है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 2)स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

अथवा

"जूझ" के नायक को मराठी अध्यापक क्यों अच्छे लगते थे?

उत्तर : कथानायक के मराठी भाषा के अध्यापक न. वा. सौंदलगेकरकविता पढ़ते समय सस्वर कविता पाठ करते थे।वे कविता के छंद,लय, यति-गति,आरोह-अवरोह का ज्ञान छात्रों को करवाते थे। स्वयं रचित कविताएँ भी सौंदलगेकर मास्टर सुनाया करते थे।कथानायक उनसे बहुत प्रभावित थे।

अध्यापक से कविता सुनकर कथानायक भी उसी तरह या कुछ अलग चाल से कविता गाने का अभ्यास करते। धीरे-धीरे कथानायक अपनी चाल से कविता करने लगे। अध्यापक सौंदलगेकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कथानायक का काव्यपाठ छठी-सातवीं कक्षा में एवं पाठशाला के एक समारोह में भी करवाया। कविता लिखने के लिए भी अध्यापक सहयोग करते। अलंकार, छंद आदि का ज्ञान करवाते। इससे कथानायक का कविता रचने का आत्मविश्वास बढ़ने लगा।

प्रश्न 3) अध्यापक श्री सौंदलगेकर की उन विशेषताओं को रेखांकित करें, जिन्होंने लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगाई?

उत्तर : सौंदलगेकरकथानायक के मराठी भाषा के अध्यापक थे।वो जब कविता पढ़ते, तो कविता का सस्वर पाठ करते। उन्हें मराठी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा की कई कविताएँ कंठस्थ थी।वो अभिनय के साथ कविता का भाव विद्यार्थियों को ग्रहण करवाते। एक ही भाव की अन्य कविताएँ भी सुनाते।कवि यशवंत बोरकर,गिरीशआदि से मुलाकात के संस्मरण सुनाते।कथानायक जबसौंदलगेकर अध्यापक को सुनता, तो अपनी सुधबुध भूल जाता। दम रोक कर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि आदि का रसपान करता।

जब कथानायक कोईतुकबंदी करता, तो अध्यापक उसमें संशोधन करते। कई बार कथानायक अध्यापक को रात को ही अपनी रची कविता दिखाने पहुँच जाता। अध्यापक कथानायक को बताते कि कविता की भाषा कैसी होनी चाहिए, संस्कृत भाषा का उपयोग कविता में किस प्रकार करना चाहिए, कविता कालयक्रम कैसा होना चाहिए, शुद्ध लेखन के क्या नियम हैं, अलंकार शास्त्र का ज्ञान आदि अनेक विषयों का ज्ञान देते। अध्यापक कथानायक को कविता-संग्रह पढ़ने के लिए देते।अर्थात्सौंदलगेकर अध्यापक ने कथानायक के मन में कविता लेखन की रुचि जगाई।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न4)कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

उत्तर : कविता के प्रति लगाव से पहले पशु चराते हुए, खेत में पानी लगाते समयलेखक को अकेलापनखटकता था। उसे लगता था कि कोई गपशप करने वाला होना चाहिए,हँसी-मजाक होना चाहिए। उसे लगता कि कोई साथ होना चाहिए।

कविता के प्रति लगाव होने के बाद लेखक को अकेलापन अच्छा लगने लगा, क्योंकि अकेले होने पर कविताऊँची आवाज में गाई जा सकती है,गाते-गाते थुई-थुई कर के नाचा जा सकता है, अभिनय किया जा सकता है। कविता को अपनी चाल में गाया जा सकता है। नई कविता की रचना की जा सकती है।

प्रश्न 5)आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर : पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक सोचता था कि पढ़ाई-लिखाई करके नौकरी की जा सकती है। कुछ पैसा हाथ में आने पर विठोबा आण्णा की तरह कोई कारोबार किया जा सकता है, जबकि खेतों में काम करके जन्म भर काम करके भी कुछ हाथ नहीं लगेगा।

दत्ता जी राव का रवैया भी सही था। उन्हें जब लेखक की पढ़ाई की इच्छा की जानकारी मिली, तो उन्होंने लेखक के पिता को धमकाया और आदेश दिया कि लेखक को स्कूल जाने दिया जाए। दत्ता जी राव ने लेखक से कहा किअगर तेरा बाप पाठशाला जाने से रोके, तो मेरे पास चले आना। मैं पढ़ाऊँगा।

पढ़ाई के प्रति लेखक के पिता कारवैया सही नहीं था।वो अपनीऐय्याशी के लिए पुत्र को खेती के काम में झौंक देते हैं। उनका मानना था कि उनका पुत्र पढ़-लिखकर बैरिस्टर बनने वाला नहीं है।

प्रश्न 6) दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता, तो आगे का घटनाक्रम क्या होता? अनुमान लगाएँ।

उत्तर : दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ उनके पास गए थे, परंतु लेखक की माँ नेदत्ता जी रावसे कहा - हमने यहाँ आकर सभी बातें बताई,ये उन्हें बता मतदेना, नहीं तो हमारी खैर नहीं। उन्हें कहना कि मैं साग-भाजी देने आई थी।

लेखक की माँने अपने पति के घर आने पर कहा- मैं साग-भाजी देने दत्ता जी राव के घर गई थी। उन्होंने तुम्हें मिलने के लिए बुलाया है।

जब लेखक के पिता दत्ता जी राव के यहाँ गए तो लेखक दत्ताजीरावके यहाँ पहुँच गया। उसने पिता से कहा-माँ ने खाना खाने के लिए बुलाया है।

लेखक की माँ झूठ न बोलती तो लेखक के पिता दत्ताजीरावसे मिलने हीन जाते और अगर लेखक ने झूठ न बोला होता तो लेखक के पिता दत्ता जी राव को भ्रमित कर देते। इससे हो सकता है लेखक पढ़ने ही न जा पाता और खेतों में ही काम करतारहता।

प्रश्न 7)“जूझ” कहानी के लेखक के चरित्र की कौन सी विशेषताएँ आप को प्रभावित करती हैं? उल्लेख कीजिए।

उत्तर : “जूझ” कहानी का लेखक ही उस कहानी का कथानायक भी है। पाठ के आधार पर उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं:-

1.पढ़ने की इच्छा : लेखक जब पाँचवीं कक्षा में था, तभी उसके पिता ने उसका स्कूल छुड़वा दिया था, परंतु लेखक पढ़ना चाहता है। अगर वह अपने पिता से कहता तो पिता उसे स्कूल नहीं भेजते। इसलिए पहले वोअपनी माँको मनाता है और फिर दत्ता जी राव को मनाता है।दत्ता जी रावउसके पिता पर दबाव डालते हैं और वह स्कूल जाने में सफल होता है।

2. दूर की सोचने वाला : कथानायक जानता है किपढ़ाई करके ही वह कोई नौकरी कर सकता है, पढ़कर पैसा कमाकर कोई काम-धंधा किया जा सकता है। खेती करके कुछ विशेष हासिल नहीं होने वाला।

3.परिश्रमी : कथानायक परिश्रमी बच्चा है।वो सुबह उठकर खेतों पर पानी देने जाता,ग्यारह बजे स्कूल जाता, स्कूल से वापस आकर जानवर चराने जाता। एक छोटा-सा बच्चा सारा दिन कठिन परिश्रम करता।

4.लक्ष्य हासिल करने की लगन : कथानायक में लक्ष्य प्राप्त करनेकीलगन है। कक्षा में विशेष स्थान पाने के लिए वह लगन से पढ़ता है, गणित का खूब अभ्यास करता है।परिणामस्वरूप मॉनिटर पाटील की तरह वो भी कक्षा के दूसरे बच्चों के सवाल जाँचता है। कविता के प्रति लगाव उत्पन्न होने पर वो हर समय कविता के बारे में ही सोचता है और काफी हद तक कविता लिखने में भी सफल हो जाता है।

5.<u>अध्यापकों का प्रिय</u> : अपनी मेहनत के बल पर कथानायक गणित के अध्यापक का प्रिय हो जाता है और कक्षा में छात्रों के सवाल जाँचता है। मराठी भाषा के अध्यापक भी कथानायक को पसंद करते हैं और उसे अच्छी कविता लिखने के गुर बताते हैं।

प्रश्न 8)जूझ कहानी के प्रमुख पात्र को पढ़ना जारी रखने के लिए कैसे जूझना पड़ा और किस उपाय से वह सफल हुआ?

उत्तर :लेखक के पिता ने कक्षा पाँच में उसकी पढ़ाई छुड़वा दी थी। जनवरी का महीना आ गया था। लेखक सोचता हैकि अब भी अगर वह स्कूल जाता है तो मेहनत कर के पास हो जाएगा। लेखक स्कूल जाने की इच्छा माँ को बताता है, पर लेखक की माँ जानती है कि वह पिता को नहीं मना सकती। इसलिए पिता पर दबाव डालने के लिए लेखक व उसकी माँ दत्ता जी रावके पास जाते हैं। लेखक की माँ लेखक की इच्छा दत्ता जी राव को बताती है। दत्ता जी राव लेखक के पिता पर दबाव डालते हैं। दत्ता जी राव के सामने लेखक के पिता लेखक पर आरोप लगाते हैं। लेखक अपने पर लगे आरोपों का उत्तर देता है। दत्ता जी राव के धमकाने पर लेखक के पिता लेखक को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं, परंतु कुछ शर्तें लगाते हैं जैसे- लेखक स्कूल जाने से पहले खेत में पानी लगाएगा तथा स्कूल से वापस आकर जानवर चराएगा। आवश्यकता पड़ने पर खेत के काम के लिए छुट्टी लेगा। लेखक पिता की हर बात को स्वीकार करता है। इस तरह वह अपने प्रयत्नों से स्कूल जाने में सफल रहा।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 9)“जूझ”के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए क्यों तड़पता था? उसे खेती का काम अच्छा क्यों नहीं लगता था? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था, क्योंकि खेती के साधन पारंपरिक साधन थे, जिसके कारण खेती से उन्नति प्राप्त नहीं कर सकते थे। पढ़कर वो कोई नौकरी कर सकताहैऔर पैसा कमा कर कोई कारोबार कर सकता है। इसीलिए लेखक को खेती का काम अच्छा नहीं लगता थाऔरवो पढ़ाई करना चाहता है।

प्रश्न 10)“जूझ”कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष की प्रेरक कथा है। सिद्ध कीजिए।

उत्तर : “जूझ” कहानी प्रतिकूल स्थिति में भी संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। कथानायक एक छोटा बच्चा है। वह पढ़ना चाहता है, क्योंकि वह जानता है किपढ़ाई ही उन्नति का द्वार है तथा नायक यह भी जानता है कि पढ़ने के लिए पिता अनुमति नहीं देंगे, जब तक कि उन पर दबाव न डाला जाए। इसलिए पहले वह अपनी माँ को मनाता है। माँ के साथ दत्ता जी राव के पास जाकर उन्हें अपनी पढ़ने की इच्छा बताता है और दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाता है।

दत्ता जी राव के कहने पर पिता कथानायक को पाठशाला भेजने के लिए तैयार तो होते हैं, परंतु कुछ शर्त भी रखते हैं।लेखकपिता की हर शर्त पूरी करता है। कक्षा में जाने पर कक्षा में सारे विद्यार्थी नये हैं। शरारती बच्चों से खुद को बचाता है। मेहनत करके गणित के अध्यापक का प्रिय बनता है। मराठी भाषा के अध्यापक से प्रभावित होता है। उनसे प्रेरणा लेकर और मेहनत करके कविता

VASUNDHARAHINDI.COM

रचने लगता है। वास्तव में कहानी “जूझ” प्रतिकूल परिस्थिति में संघर्ष करने और अपने लक्ष्य को पाने की प्रेरणा देने वाली कहानी है।

प्रश्न 11) “जूझ” कहानी क्या संदेश देती है?

उत्तर : “जूझ” कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष का संदेश देती है। एक छोटा सा बच्चा है। पढ़ने की प्रबल इच्छा रखता है, इसलिए वह अपने पिता को मनाने के लिए दत्ता जी राव के द्वारा पिता पर दबाव डलवाता है, पाठशाला पढ़ने जाने के लिए पिता की शर्तें मानता है, जैसे- पाठशाला जाने से पहले खेत में पानी लगाना, पाठशाला से आकर ढोर चराना आदि। कक्षा में अपने आप को स्थापित करने के लिए कथानायक को संघर्ष करना पड़ता है। कविता बनाने के लिए कथानायक ने खूब संघर्ष किया। हम कह सकते हैं वास्तव में “जूझ” कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का संदेश देती है।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM